ISSN 2394-5303

PRINTING AREA®

Issue-92, Vol-02, August 2022

Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

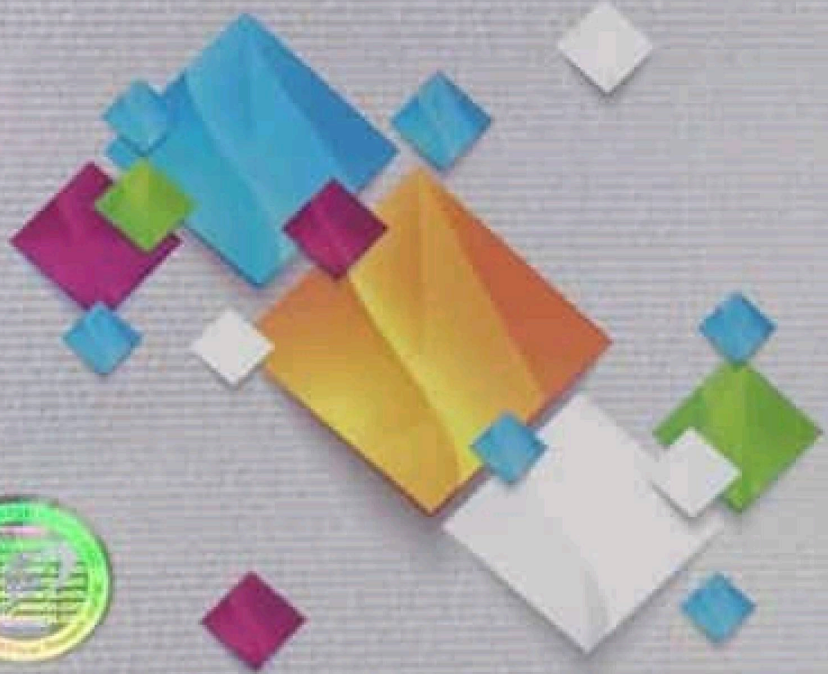

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

14) कविता वाङ्मय प्रकार : आस्वाद आणि आकलन
डॉ. सचिन पाटील, एरंडोल ||65

15) तौलनिक साहित्याच्या अनुषंगाने दिलेल्या रवीन्द्रनाथ ठाकूरांच्या 'विश्व–साहित्य' ...
डॉ. संदीप मधुकर सपकाळे, वर्धा ||71

16) ज्ञानेश्वरीतून येणारा भक्तियोग
शुभांगी भाऊसाहेब शेलार & प्रा. डॉ. शशिकांत पाटील, जि. जालना ||73

17) वर्तमान विसंगतियों पर प्रहार करने वाले 'पन्द्रह व्यंग्य नाटक'
डॉ. भगवान एन. जाधव, नांदेड, महाराष्ट्र ||77

18) छत्तीसगढ़ क्षेत्र में ग्रामीण समाज का वर्गीकरण (१८वीं–१९वीं शताब्दी)
डॉ. अंजली ||82

19) हिंदी साहित्य में नारी विमर्श
प्रा.डॉ. उत्तम जाधव, जि. औरंगाबाद ||85

20) डॉ.सुशीला टाकभौरे के उपन्यासों में चित्रित दलित नारी की समस्याएँ
टी.विजय लक्ष्मी, विजय नगरम्, आन्ध्र प्रदेश ||88

21) सितार में ठुमरी वादन प्रक्रिया
लक्की, चण्डीगढ़ ||90

22) कोरोना महामारी का बीकानेर शहर के एमएसएमई पर प्रभाव : भुजिया उद्योग के ...
डॉ. हेमेंद्र अरोड़ा, बीकानेर ||93

23) कारगिल विजय के सामरिक परिणाम
डॉ. बालू दान बारहठ, उदयपुर ||98

24) कुमाऊँ में चंद राजवंश का प्रभाव
भारत भूषण, नैनीताल (उत्तराखण्ड) ||103

25) एक राष्ट्र एक चुनाव (One Nation One Election)
डॉ॰ (श्रीमती) दर्शना, देवरिया, उत्तर प्रदेश ||105

26) निर्मल वर्मा के कथा–साहित्य में व्यक्ति, परिवेश और समाज
कु. ज्योति, दिल्ली ||109

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

संदर्भ

कृषि विभाग, राजस्थान सरकार। कृषि सांख्यिकी। http://agriculture.rajasthan.gov.in/content/agriculture/en/Agriculture-Department-dep/agriculture-statistics.html.

अहमद, अजाज (२०२०)। कोविड–१९ : बिग लॉस टू बीकानेर इंडस्ट्री ड्यूरिंग लॉकडाउन। रिसर्च गेट। https://www.researchgate.net/publication/342866097_Covid_19-Big_Loss_To_Bikaner_Industry_During_Lockdown.

चिकित्सा, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग। राजस्थान सरकार। जिलेवार स्थिति – कोविड–१९ । http://www.rajswasthya.nic.in/.

वस्तु का भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) नियम (२००२)। https://www.origingi.com/igioriginworldwidegicompilationuk/download/386/1077/24.html?method=view.

बौद्धिक संपदा, भारत। भौगोलिक संकेत रजिस्ट्री। (एन.डी.) बीकानेरी भुजिया – आवेदन विवरण। http://ipindiaservices.gov.in/GIRPublic/Application/Details/142.

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, राजस्थान सरकार (२०१८)। राजस्थान में उत्पादों का भौगोलिक संघ। https://dipp.gov.in/sites/default/files/ru-2442.pdf.

गृह मंत्रालय (समूह–७), राजस्थान सरकार (११ मई, २०२१)। आदेश दिनांक ०९.०५.२०२१ में जारी दिशा–निर्देशों के निष्पादन हेतु विभागीय आदेश। https://home.rajasthan.gov.in/content/dam/homeportal/homedepartment/pdf/CercularNotificationOrder/Gr7/Labour_Pass.pdf.

⌘⌘⌘

23

कारगिल विजय के सामरिक परिणाम

डॉ. बालू दान बारहठ
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग,
सुखाड़िया वि.वि., उदयपुर

शोध सारांश–

पाकिस्तान के अस्तित्व में आने के बाद से भारत के साथ उसके संबंध तनावपूर्ण ही रहे। कश्मीर को प्राप्त नहीं कर पाने की खीझ से वह कभी मुक्त नहीं हो पाया। इसके परिणामस्वरूप उसने १९४७ व १९७२ की जंग को भी आमंत्रित किया, जिसमें मिली हार ने उसे और आक्रोशित किया। फलतः पाकिस्तान ने १९९९ में कारगिल आक्रमण का दुस्साहस किया। पाकिस्तान का यह हमला कूटनीतिक, रणनीतिक व नैतिक दृष्टि से न केवल गलत था अपितु उसके लिए आत्मघाती भी था। वह सैन्य दृष्टि से तो पराजित हुआ ही राजनय के क्षेत्र में भी पाकिस्तान को इस विश्व में भारी किरकरी हुई थी। प्रस्तुत शोध पत्र में कारगिल युद्ध के कारणों, परिणामों तथा इससे हमारे सबक पर केन्द्रित है।

जम्मू कश्मीर के संविधान के प्रथम अनुच्छेद में अंकित है– सांस्कृतिक रूप से जम्मू कश्मीर सदियों से भारत का अंग रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व यह लम्बे समय तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। १५ अगस्त १९४७ को हम स्वतंत्र हुए लेकिन अंग्रेजों ने आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों स्तर पर भारत का शोषण किया। इस दोहन और शोषण का दौर लगभग डेढ़ सौ साल चला और अंततः वर्ष १९४७ में अंग्रेज भारत से वापस पर जाते–जाते उन्होंने ब्रिटिश भारत का विभाजन किया जिससे अस्तित्व में आया नया इस्लामिक पाकिस्तान। विभाजन ब्रिटिश भारत का हुआ था लेकिन देसी रियासतों को यह अधिकार दिया गया था कि वे

...ता था पाकिस्तान से दो किसी भी एक देश में जा सकती थी। देसी रियासतें किस डोमिनियन का हिस्सा होंगी यह अधिकार केवल और केवल उस रियासत के राजा या नवाब को दिया गया था। अपने इसी अधिकार का प्रयोग करते हुए जम्मू कश्मीर के महाराजा हरी सिंह ने २६ अक्तूबर १९४७ को जम्मू कश्मीर का अधिमिलन भारत में कर दिया था, जिसे माउन्टबेटन ने २७ अक्तूबर १९४७ को स्वीकार कर लिया था।

पाकिस्तान अस्तित्व में आने के बाद इस भ्रम में था कि जम्मू कश्मीर पाकिस्तान में आ जाएगा। लेकिन पाकिस्तान का यह सपना केवल सपना ही रह गया। जब पाकिस्तान को लगा कि महाराजा हरी सिंह जम्मू कश्मीर का अभिमिलन भारत में करेंगे तो उसने २२ अक्तूबर १९४७ को जम्मू कश्मीर पर पहला आक्रमण किया। जम्मू कश्मीर के भारत में अभिमिलन के पश्चात जब भारतीय सेना जम्मू कश्मीर पहुँची तब तक राज्य का बहुत बड़ा हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में चला गया। भारतीय सेना ने राज्य के बहुत से हिस्सों से पाकिस्तानी सेना को खदेड़ा। तब ब्रिटिश षड्यंत्र के चलते ३१ दिसंबर १९४८ को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पाकिस्तान के हमले के विरोध में युनाइटेड नेशंस गए। नेहरु वहां पर अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों के भ्रमजाल में फंस गए। जिसके परिणामस्वरूप आज जम्मू कश्मीर का एक बहुत बड़ा हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में चला गया जिसे हम पाकिस्तान अधिक्रांत जम्मू कश्मीर के नाम से जानते हैं। मीरपुर, भिम्बर, कोटली, बाग, मुज्जफराबाद, गिलगित और बल्तिस्तान आदि क्षेत्र पाकिस्तान अधिक्रांत जम्मू कश्मीर में आते है ।

पाकिस्तानी सेना की गलतफहमियाँ और उसके परिणाम

जावेद अब्बास पाकिस्तानी सेना का एक अधिकारी था। जब यह आफिसर कमांड एंड स्टाफ कॉलेज में लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर था तो उसे रिसर्च का एक काम सौंपा गया था जिसे उसने तीन साल में पूरा किया था। रिसर्च प्रोजेक्ट का नाम था इंडिया — ए स्टडी इन प्रोफाईल। इस स्टडी के अनुसार पाकिस्तानी सेना का मानना है कि भारत की अपनी समस्याएं है और उन समस्याओं का लाभ उठा कर भारत की विशाल और शक्तिशाली सेना को कंट्रोल में किया जा सकता है। यह स्टडी १९९० में प्रकाशित हुई थी लेकिन पाकिस्तानी सेना की मनःस्थिति पहले से ही कुछ अलग नहीं थी ।

१९४७ के बाद से पाकिस्तान और विशेषकर पाकिस्तानी सेना जम्मू कश्मीर को अपना अधूरा अजेंडा मानती रही है और भारत के जम्मू कश्मीर में कोई न कोई समस्या खड़ी करने की कोशिश करती रहती है। अयूब खान पाकिस्तानी सेना के पहले जनरल थे जिन्होंने इस्कंदर मिर्जा को सत्ता से बाहर कर पाकिस्तान पर कब्जा किया था। अयूब खान भारत के लोगों को बीमारी ग्रस्त मानता था। उसकी सोच थी कि भारत इतना कमजोर है, भारतीयों का मनोबल इतना कमजोर है कि वो मजबूत प्रहार नहीं सह सकते और बिखर जाते है। इसी गलतफहमी का शिकार होकर अयूब खान ने भारत पर आक्रमण किया था। तत्कालीन पाकिस्तानी विदेश मंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने अयूब खान को पूरा विश्वास दिलाया था कि भारत अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर आक्रमण नहीं करेगा। अयूब खान और उसकी पाकिस्तानी सेना इतनी गफलत में थी कि ३ सितम्बर १९६५ में जब भारतीय सेना लाहौर के बाहरी इलाकों तक पहुँच चुकी थी उस समय पाकिस्तानी सेना के जवान सुबह के समय रूटीन एक्सरसाइज कर रहे थे। भारत की जवाबी कार्यवाही से अयूब खान इतने घबरा गए थे कि अपने कैबिनेट की बैठक में अयूब खान ने कहा था– ५ मिलियन कश्मीरियों के लिए पाकिस्तान अपने १०० मिलियन लोगों को कभी खतरे में नहीं डालेगा। इस हार के बाद अयूब खान कभी अपनी इमेज नहीं सुधार पाया।

जिस गफलत का शिकार अयूब खान था उसी गलतफहमी का शिकार याहया खान भी था। १९७१ में याहया खान को किसी ज्योतिषी ने कहा था कि वो आने वाले १० साल तक पाकिस्तान के हेड ऑफ स्टेट बने रहेंगे। यह बात सुनकर याहया खान बहुत खुश था लेकिन इस बात से अनजान था कि दस वर्षों तो छोड़िये वो आने वाले दस दिनों में अपने पद से हटा दिया जाएगा। स्वप्रशंसा में याहया खान और

उनकी सोच इस कदर तक डूबी हुई थी कि जब उन से पूछा गया कि वो भारत का मुकाबला कैसे करेंगे तो उनका जवाब था– मुस्लिम लड़ाकों की ऐतिहासिक कुव्वत के बल पर।

यह जवाब उस तत्कालीन राष्ट्रपति का था जिन्हे जब पता चला कि भारतीय फौजी ने ईस्ट पाकिस्तान पर हमला बोल दिया है तो उनका जवाब था–

मै ईस्ट पाकिस्तान के लिए क्या कर सकता हूँ? मै केवल प्रार्थना कर सकता हूँ।

सत्ता के नशे मे चूर इस पाकिस्तानी सेना का हाल देखिये कि पाकिस्तान के नेवल चीफ को पाकिस्तानी एयर स्ट्राइक के बारे मे पाकिस्तानी रेडियो से पता चला जब वह सुबह अपने काम के लिए अपनी कार से निकले थे। लेफ्टिनेंट जनरल ऐ के नियाजी को एयर स्ट्राइक्स के बारे मे बीबीसी वर्ल्ड सर्विस सुनते हुए पता चला था। जैसे अयूब खान ने कश्मीरियों को कोसा था ठीक वैसे याहया खान ने कहा था कि–

वह बंगालियों के लिए वेस्ट पाकिस्तान को खतरे मे नहीं डाल सकता।

कारगिल युद्ध – पाकिस्तानि सेना के दिमाग की उपज

१९६५ और १९७१ मे पाकिस्तानी घमंड चूर चूर हुआ लेकिन पाकिस्तानी सेना की कुपित मानसिकता मे परिवर्तन नहीं आया था। १९९९ मे कारगिल से पहले भी दो बार भारत पर कारगिल से हमला करने का प्रपोजल बनाया गया था और पाकिस्तान मे राजनीतिक आकाओ को पूरा प्लान भी प्रस्तुत किया गया था लेकिन दोनों बार यह प्लान रिजेक्ट हो गया था। एक बार जिया उल हक के समय और दूसरी बार बेनजीर भुट्टो के समय। भुट्टो के सामने जब यह प्लान रखा गया तब पाकिस्तानी सेना का डीजीएमो था परवेज मुशर्रफ, यह वो ही व्यक्ति था जो कारगिल के समय पाकिस्तानी सेना का प्रमुख था।

कारगिल युद्ध के जिम्मेवार चार लोग थे–

दो बार कारगिल का प्लान रोका जा चुका था लेकिन १९९९ मे जब कारगिल पर दोबारा हमले का प्लान बनाया गया तो परवेज मुशर्रफ पाकिस्तानी सेना का प्रमुख था। मुशर्रफ के अलावा लेफ्टिनेंट जनरल मोहम्मद अजीज खान, लेफ्टिनेंट जनरल महमूद खान और मेजर जनरल जावेद हसन इन चारों के अलावा लेफ्टिनेंट कर्नल जावेद अब्बास भी कारगिल युद्ध के लिए जिम्मेदार है जिसकी स्टडी इंडिया... स्टडी इन प्रोफाइल से परवेज मुशर्रफ बहुत ... था, उसे लगता था कि वो भारत पर हमला करेगा और भारत बिखर जाएगा। पाकिस्तानी सेना इस बात से ... थी कि वो भी अब भारत की तरह परमाणु शक्ति है और इस दबाव मे भारत जवाबी हमला नहीं करेगा लेकिन १९६५ और १९७१ की तरह पाकिस्तानी आकलन १९९९ मे भी पूरी तरह से गलत साबित हुआ।

पाकिस्तानी हमले का उद्देश्य

पाकिस्तानी हमले का मुख्य उद्देश्य था नेशनल हाईवे एक की सप्लाई बंद करवाना, यह हाईवे श्रीनगर को लेह से जोड़ता है। फिर पाकिस्तानियों को लगता था कि सप्लाई बंद होने से भारतीय सेना बहुत ... किसी भी तरह का जवाबी हमला नहीं कर पाएगी, साथ ही पाकिस्तानियों को लगता था कि भारत मे इतनी क्षमता नहीं है कि वो पाकिस्तानी सेना को उनकी जगह से हटा पाए।

इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि कारगिल हमले का वृहद् पक्ष, एक दूसरा पहलू ... था जोकि राज्य के सबसे छोटे हिस्से कश्मीर से जुड़ा हुआ था जिसका खुलासा आज तक नहीं हो पाया क्योंकि कारगिल हमले के बाद भारतीय सेना इतना मुहतोड़ जवाब देगी इसकी कल्पना पाकिस्तानी सेना के अधिकारियों को नहीं थी। इस वृहद् पक्ष के अनुसार अफगानिस्तान मे तालिबान प्रमुख मुल्ला महमूद ... से कश्मीर मे जेहाद लड़ने के लिए पाकिस्तान ने ... से ३० हजार लड़ाको की मांग की थी। तालिबान ने ... हजार लड़ाको का वायदा कर दिया था और पाकिस्तानी आर्मी के अधिकारी इस प्रस्ताव से बेहद खुश थे।

कारगिल को लेकर परवेज मुशर्रफ ... १९६५ के युद्ध से पहले कारगिल की चोटियों ... पाकिस्तानी सेना थी, यह सुरक्षा और सामरिक ...

महत्वपूर्ण जगह थी। लेकिन १९६५ और १९७१ के युद्ध में भारत ने यह महत्वपूर्ण चोटियाँ अपने कब्जे में ले ली थी। पुनः इन चोटियों को वापिस लेना चाहता था।

दूसरा, कश्मीर को ऐसा अंतर्राष्ट्रीय मसला बनाना जिसे लेकर परमाणु युद्ध की आशंका है और जिसमें तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता है।

तीसरा, नियंत्रण रेखा की पवित्रता को भंग कर भारत के अनियंत्रित क्षेत्रों को कब्जे में लेना।

भारत की जवाबी कार्यवाही

पाकिस्तान को भारत की जवाबी कार्यवाही का अंदाजा बिलकुल भी नहीं था। परवेज मुशर्रफ ने अपनी हार स्वीकार करते हुए यह कहा था कि भारत ने न केवल सैन्य बल्कि अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमेसी से भी पाकिस्तान को करारा जवाब दिया।

कारगिल हमले के बाद थोड़े समय के लिए भारतीय राजनीतिक नेतृत्व और सेना दोनों थोड़ा असमंजस में रहे लेकिन फिर डट कर पाकिस्तानी हमले का जवाब दिया। एक–एक कर कारगिल की चोटियों को खाली कराया जाने लगा। १३ जून, १९९९ को तोलोलिंग चोटी को भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तान के कब्जे से छुड़ा लिया, जिससे आगे के युद्ध में उन्हें बड़ी मदद मिली। जल्दी ही २० जून, १९९९ को प्वाइंट ५१४० भी उनके कब्जे में आने से तोलोलिंग पर उनका विजय अभियान पूरा हो गया। चार जुलाई को एक और शानदार विजय दर्ज की गई, जब टाइगर हिल को घुसपैठियों से मुक्त कर दिया गया। पाकिस्तान घुसपैठियों को खदेड़ना जारी रखते हुए भारतीय सैनिक आगे बढ़ते रहे। बटालिक की प्रमुख चोटियों से पाकिस्तानी सेना को भगा कर उन्हें दोबारा भारत के कब्जे में ले लिया गया। भारत की १४ रेजिमेंट्स ने शक्तिशाली तोपों से कारगिल में घुसपैठ कर बैठे पाकिस्तानी सैनिकों को निशाना बनाना शुरू कर दिया था। भारत ने चोटियों के भीतर वायुसेना के विमानों से भी हमले शुरू कर दिए। पाकिस्तान अपनी वायुसेना का प्रयोग नहीं कर पाया क्योंकि पाकिस्तान ने दुनिया के सामने झूठ बोला था कि कारगिल में कश्मीरी मुजाहिदीन अपनी आजादी के लिए लड़ रहे हैं। यदि पाकिस्तान अपनी वायुसेना का उपयोग करता तो पूरी दुनिया के सामने उसका झूठ पकड़ा जाता। पाकिस्तान ने बहुत बड़ी संख्या में अपने सैनिक खोये। पाकिस्तान की नॉर्दर्न लाइट इन्फेंट्री पूरी तरह से खत्म हो गयी थी। कारगिल युद्ध के समय पाकिस्तान के विदेश सचिव रहे शमशाद अहमद खान ने कारगिल युद्ध के बारे में कहा कि दुनिया के किसी भी विदेश विभाग के लिए ऐसा समय सबसे खराब होता है। हमने पूरी क्षमता से अपना काम किया किन्तु पूरी दुनिया ने हमें इस युद्ध का दोषी घोषित कर दिया था। पूरी दुनिया का दबाव हम पर था उन्होंने हमें युद्ध के मैदान से पीछे हटने के लिए कहा और हमारे राजनैतिक नेतृत्व ने पीछे हटने का सही फैसला लिया। पाकिस्तानी सेना में लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत) अली कुली खान ने कारगिल युद्ध में हुई हार को पाकिस्तानी इतिहास की सबसे बुरी हार घोषित कर दिया था जिसमें अनगिनत मासूम लोग मारे गए थे। कारगिल युद्ध के समय पाकिस्तानी सेना के भी कई सच उजागर हुए जिसमें एक बड़ा खुलासा यह हुआ कि बहुत बड़ी संख्या में पाकिस्तानी सेना के अधिकारी नशे की लत में डूबे हुए है।

कारगिल युद्ध – हर मोर्चे पर पाकिस्तान की किरकिरी

कारगिल युद्ध ने पाकिस्तान को एक राष्ट्र के रूप में पूरी तरह से बेनकाब कर दिया था। तत्कालीन पाकिस्तानी प्रधानमंत्री और सेना प्रमुख दोनों एक दूसरे पर आरोप लगाते रहे। नवाज शरीफ का स्टैंड है कि उन्हें कारगिल हमले के बारे में कुछ नहीं पता था, दूसरी तरफ मुशर्रफ का कहना है की नवाज शरीफ को सब पता था। अब नवाज शरीफ को पता था या नहीं दोनों ही सूरत में पाकिस्तान की किरकिरी होती है। यदि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को इस हमले का नहीं पता था तो यह बात और पुख्ता हो जाती है कि पाकिस्तान के पास सेना नहीं है बल्कि सेना के पास एक पाकिस्तान है। तत्कालीन पाकिस्तानी विदेश मंत्री का भी कहना है कि देश का विदेश मंत्री होने के बाद भी उन्हें १७ मई की सुबह कारगिल हमले के विषय में जानकारी प्राप्त हुई और उससे कभी

भी इस स्थिति के डिप्लोमेटिक स्तर पर क्या परिणाम होंगे इसके बारे में कभी भी नहीं पूछा गया। पाकिस्तानी सेना में इस कदर अफवा उड़ती थी कि पाकिस्तान के तत्कालीन एडमिरल फसीहुद्दीन बुखारी ने मुशर्रफ से सीधे-सीधे पूछ लिया था कि मुझे इस आपरेशन की कोई जानकारी नहीं है परन्तु मैं पूछता हूँ कि इतने बड़े मोबिलाइजेशन का क्या उद्देश्य है? हम एक उजाड़ सी जगह के लिए युद्ध करना चाहते है जिसे हमें वैसे भी सर्दियों के समय खाली करना पड़ेगा। मुशर्रफ के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था। पूरी दुनिया के साथ-साथ पाकिस्तान के साथी चीन ने भी पाकिस्तान को कारगिल की चोटियों से अपनी सेना वापिस बुलाने के लिए कहा था। शुरुआत में पाकिस्तान लगातार कह रहा था कारगिल के पहाड़ों में मुजाहिदीन लड़ रहे है लेकिन वैश्विक दबाव में जब पाकिस्तान को अपने सैनिक वापस बुलाने पड़े तो वह पूरे विश्व के सामने बेनकाब हुआ कि पाकिस्तान मुजाहिदीनों को कंट्रोल कर सकता है। इस से पूरे विश्व में एक बात स्पष्ट होने लगी कि पाकिस्तान कश्मीर में मुजाहिदीनों के नाम पर आतंक फैला रहा है। परवेज मुशर्रफ कारगिल को अपनी सैनिक विजय मानता है किन्तु सत्य यह है कि पाकिस्तान ने अपने सैनिकों को कारगिल की ऊँचाइयों पर मरने के लिए छोड़ दिया था। कई जवानों की पोस्ट मार्टम रिपोर्ट्स से पता चला उनके पेट में घास थी यानी कि जवानों के पास खाने को भी कुछ नहीं था।

परवेज मुशर्रफ ने अपनी किताब में लिखा कि मिलिट्री ने जो अर्जित किया, डिप्लोमेसी में हमने वो गँवा दिया। लेकिन दूसरी तरफ नवाज ने एक इंटरव्यू में बोला कि जब तक मैं अमेरिका के पास मदद मांगने गया और अमेरिका मदद करने को तैयार हुआ, तब तक भारतीय फौजें कारगिल से लगभग सब जगह से पाकिस्तानियों को निकाल चुकी थी और तेजी से आगे बढ़ रही थी ऐसे में मैंने पाकिस्तानी सेना के सम्मान को बचाया। मुशर्रफ का कहना है कि उसने नवाज से नहीं कहा था कि वो अमेरिका से बातचीत करें। लेकिन दूसरी ओर नवाज ने कहा कि जब वह अमेरिका जा रहे थे तो मुशर्रफ उनको एअरपोर्ट छोड़ने आया और उसने अमेरिका से बात करने को कहा ताकि पाकिस्तान सेना के जवान कारगिल की चोटियों से सुरक्षित निकल सकें, जहाँ अब भारतीय फौजें आगे बढ़ रही थी। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि पाकिस्तान गैंग ऑफ फोर (चार सेना के अधिकारी जिन्होंने कारगिल प्लान बनाया था) की फैंटसी का शिकार रहा और इस तरह एक असफल देश का शातिर प्रयास भी असफल रहा।

पूरे विश्व के लिए भी और विशेषत पाकिस्तान के लिए कारगिल एक ऐसा रणनीतिक व सामरिक संदेश है जिसे याद रखना एक तरह से उसके अस्तित्व की आवश्यक शर्त है। इस बात की संभावना कम है कि अब पाकिस्तान का कोई जनरल या शासक कारगिल की पुनरावर्ति करेगा। इससे यह संदेश भी मिलता है कि जो नैतिक रूप से गलत होता है वह सैन्य, सामरिक व रणनीतिक रूप से भी गलत होता है।

सन्दर्भ सूची–

1. Rawat Rachna Bisht, Kargil untold stories from the war, Panguin Pub. New Delhi-2019
2. Malik V.P. Kargi from Surprise to victory, Harper collins, 2020.
3. Hussain Ashfaq, witness to blunder bookwise pvt. ltd., 2008.
4. Singh Amarinder, A ridge too far, war in the kargil Heights, 1999 variety book depot, 2020.
5. Musharaf Perveg, in the line of fire free press, Newyork, 2006.
6. Rawat Rachna Bisht, Kargil untold stories from the war, Panguin Pub. New Delhi-2021
7. Bavej harinder, Kargil untold stories from the war, Panguin Pub. New Delhi- 2021

⌘⌘⌘